अ

॥ श्री सुकृतदेवाय नमः ॥

सत्यकाम! सत्यसंकल्प!!

उद्घोष

अद्भुत मारग योग विहंगम, मैं तुमको बतलाऊँगा ।
यदि विधिवत् तुम साधन करिहो, अमरलोक पहुँचाऊँगा ॥

प्रकृति अधार तोहि छोड़वाऊँ, निज स्वरूप ठहराऊँगा ।
सुरति उलटि के गगन चढ़ाऊँ, डोरी मकर धराऊँगा ॥

पिण्ड ब्रह्माण्ड शून्य जो अरषठ, ता ऊपर बैठाऊँगा ।
अनुभव दरशे मोती बरसे, अमिय नद्द अन्हवाऊँगा ॥

शुद्ध रुप तोहिं हंस बनाऊँ , परम पुरुष दिखलाऊँगा ।
वहाँ के दृश्य कौन मैं वरणौं, वाणी बुद्धि न पाऊँगा ॥

महाप्रभु अनन्त दयामय, उनसे तोहिं मिलाऊँगा ।
कहैं ‘ सदाफल ’ परमानन्दा, आवागमन मिटाऊँगा ॥